

Date

□□ □□ □□□□

दि. 7-2-11



सोमवार



# चतुर्थ ज्ञान



सभी पुण्यआत्माओं को मेरा नमस्कार - - -

इस गहनध्यान अनुष्ठान

के समय अवधि में 45 दिनों तक आपसे मैं बड़े करीब से जुड़ा हुआ महसूस करता हूँ, और प्रत्येक क्षण आप ही के लिये सोचते रहता हूँ, ऐसा कौनसा मार्ग निकाला जाये ऐसा कौनसा रास्ता निकाला जाये जिससे आपकी प्रगती हो सके, आपने सभीने मिलकर मेरे लिये शकान्त स्थान की व्यवस्था की है, इसी लिये यह संभव हो पा रहा है, और इस शकान्त स्थान के कारण वैचारिक प्रदुषण की दुनिया में आप हैं, पर मैं नहीं हूँ, और मैं आपकी दुनिया में नहीं हूँ, इसी लिये अलग रह कर आपकी लकलीफे, आपकी समझोते, आपके आसपास का वातावरण सभी को बड़े अच्छे से जान पा रहा हूँ, अभी महसूस कर रहा हूँ, की आप वैचारिक प्रदुषण की उस दुनिया में जी रहे हैं, जहाँ वैचारिक धूल जितनी स्वच्छ करते हैं, वह उतनी ही अधिक चिपचली है, और रही बाल आध्यात्मिक प्रगती की तो वह "दिन भर चलते तो भी ढाँह कोस वाली" बाल लगती है, प्रगती हो ही नहीं पा रही है, इसी लिये मैं कोई ऐसा मार्ग खोजना चाहता था, जिस मार्ग से आगे बढ़ा जाये और उसी के लिये मैं प्रतिदिन गुरुशक्तियों को आमंत्रित कर के प्रार्थना करता था, कोई आसान मार्ग कोई आसान तरीका बताइये जो मार्ग मनुष्य वैचारिक प्रदुषण वाली दुनिया में रहे हुए भी अपना सके, आज खुद वह मार्ग मील गया है,

और वही मार्ग में आपको आगे चलाने जा रहा है, मैंने प्रथम यह मार्ग अपनाकर "अनुभव" लिया है, और पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आपको भी इसका अच्छा अनुभव अवश्य आयेगा, केवल बात "विश्वास" की है, मैंने मेरे गुरुओं पर संपूर्ण विश्वास रख कर इस मार्ग को अपनाया है, और आप को भी इस मार्ग पर "संपूर्ण विश्वास" रख कर इसे अपनाना है, आप पर मुझे पूर्ण विश्वास है, कि आप भी संपूर्ण विश्वास के साथ इस मार्ग को अपनायेंगे।

प्रकृति में "जल तत्व" का एक महत्वपूर्ण स्थान है, आज पृथ्वी में भी अधिकांश भाग पानी से ही भरा हुआ है, याने इस पृथ्वी पर पानी की सामुदायिक शक्ति सबसे बड़ी है, और अगर हमें प्रकृति के साथ समरसता करना है, तो उसका सर्वश्रेष्ठ मार्ग है, पानी के साथ समरसता को स्थापित करना और इसी लिये हमारे धार्मिक ग्रंथों में नदियों और समुद्र को इतना अधिक महत्व दिया गया है, पवित्रता और शुद्धता के लिये गंगा जल को पवित्र माना गया है, साल भर में एक बार समुद्र स्नान करने को कहा है, और अपने गुरु के साथ नदी के स्नान का भी अपना एक महत्व है, स्नान करते समय भी पवित्र नदियों का स्मरण जैसे गंगा, नर्मदा, गोदावरी, ऐसे नाम लिये जाते हैं, वह इसी लिये कि पानी की शुद्ध स्वरूप के कारण आप जहाँ भी अपना चित्त रखेंगे पानी आपके चित्त के माध्यम से वहाँ की ऊर्जाशक्ति को ग्रहण करेगा। इसी लिये पवित्र नदियों के नाम लेकर स्नान किया जाता है, इसी बात को आधार मान कर ही आगे का प्रयोग किया है, प्रयोग शकदम सरल रूप सीधा है, पर इस प्रयोग का परिणाम बहुत ही अच्छा प्राप्त होगा है, केवल इस प्रयोग को संपूर्ण "डाढ़ा" और "विश्वास" के साथ ही करना आवश्यक है, क्योंकि डाढ़ा इसमें हमारी ग्रहण करने की क्षमता को बढ़ायेगी और विश्वास प्राप्त ऊर्जा को हमारे में स्थापित करेगा,

यह एकदम सरल प्रयोग है, आप जब कभी महसूस करे की आजकल ध्यान ठीक से नहीं हो पा रही है, ध्यान में विचार आ रहे हैं, ध्यान में चित्त बाहर की ओर भटक रहा है, या अधीक लनाव लग रहा है, या गुस्सा बड़त आ रहा है, या आपको किसी बड़े ध्यान के कार्यक्रम में शामिल होना है, जैसे अभी "महाशिवरात्री" का कार्यक्रम होने वाला है, इससे आने के पूर्व यह प्रयोग किया जा सकता है,

आप आपके स्नानागृह में आप जहाँ स्नान करते हैं, उसके बायीं ओर राक दिपक या मोमबत्ती जलाइये और दोनों हाथ लालु पर रख कर अपने चित्त को सहजार पर स्थिर कर लीं जिये। और पहला पानी का लोटा से ही "गुरुमंत्र" का जाप शुरू कीजिये और रोती भावना रखे की गुरुदेव का "चैतन्य" यह गुरुमंत्र के माध्यम से मेरे उपर बरस रहा है, और मेरा सारा शरीर उस चैतन्य से कुछ व पवीज हो रहा है, मेरे सारे शरीर के विकार दूर हो रहे हैं, मेरा चित्त भी कुछ और पवीज हो रहा है, मेरे शरीर का रोम रोम उस चैतन्य को ग्रहण कर रहा है, और मेरा शरीर एकदम हल्का लगने लग गया है, राक चैतन्य रूपी झरने के लिये मैं उसके नीचे खड़ा हूँ, और मेरा सारा शरीर उस चैतन्य में नहा रहा है,

आप ऐसे सफ़ी भाव के साथ चैतन्य स्नान करोगे तो आप को महसूस होगा सचमुच आप अपने आप ही हल्का महसूस कर रहे हैं, स्नान के समय हमारे शरीर पर कपड़े, आदि का आवरण नहीं होता है, इसीलिये हमारी संवेदनशीलता अधीक बढ़ जाती है, और हम चैतन्य को अधीक अच्छी तरह से महसूस कर सकते हैं, केवल इस बात का ध्यान रखना है, की आप ध्यान में न चले जाये क्योंकि वहा पर आपको उठाने कोई नहीं आयेगा इस प्रयोग का यह एक मात्र दोष लगता है, इस लिये इस बात का विशेष ध्यान व सावधानी रखे,

(4) Date

□	□	□	□	□	□	□	□
---	---	---	---	---	---	---	---

यह प्रयोग हमारी खराब स्थिति ठीक करने के लिये भी उपयोगी है, और बड़े कार्यक्रमों में काम करने वाले चेतन्य को तैयार करने के लिये भी उपयोगी है। स्नान करने समय जब हम गुरुमंत्र के माध्यम से गुरुशक्तियों के चेतन्य से जुड़ते हैं, तो पानी माध्यम बन कर हमें परीक्षा राव डूब करता है, हमारे शरीर में भी जलत्व की ही सामूहिकता है, और उसका लाभ हमारे शरीर राव चित्त को मिल जाता है, बस आवश्यकता है, पूर्ण "आस्था" और "विश्वास" के साथ यह करने की आप पहले स्वयंभू अनुभव लेकर देखें और आप को अगर अच्छी अनुभूति हुई तो आप किसी को भी यह प्रयोग बता सकते हो, समाज में रह कर, वैचारिक प्रदूषण में रह कर, भी अपने आप का शुद्धीकरण किया जा सकता है, यह वर्ष "आत्मजागृती वर्ष" है, और इस "आत्मजागृती वर्ष" में आवश्यक है, अपनी समस्या के लिये दूसरों को दोष न देने हुये अपनी समस्याओं का निदान अपने ही भितर खोजें, यह स्नान जाहें राक और आपकी समस्या का निदान करेगा तो दूसरी ओर जो "आनंद" का खोज आप बाहर कर रहे हो उस आनंद का स्त्रोत आपके ही भितर छुपा हुआ है, इसका भी राहलास करायेगा, हम प्रायः शान्ती के लिये निर्वाचिता पाने के लिये नदी के किनारे, तालाब के किनारे या दरिया के किनारे जाते हैं, क्योंकि वहाँ की पानी की सामूहिकता के साथ हम रहना चाहते वही सामूहिकता हम प्रतिदिन अपने घर में भी अनुभव कर सकते हैं, आप अगर नदी के किनारे जाते हैं, तो नाथी चक्र विकसित हो सकता है, आप अगर तालाब के किनारे जाते हैं, स्वाधीपठान चक्र विकसित हो कर संतुलन की स्थिति मिलती है, अगर बड़े झरने के पास जाते हैं, तो "आज्ञाचक्र" विकसित हो सकता है, और समुद्र के पास जाते हैं, तो समुद्र शरीर में ही चेतन्य की लहरें पता लग सकती हैं,

(5)

Date

□	□	□	□	□	□	□	□	□	□
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

लेकिन सारे लाभ आप आपके घर में रहते हुये प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि "गुरुमंज" के उच्चारण से पानी में साक्षात् "जलत्व" ही उत्पन्न हो जाता है। जलत्व के गुणों की सामुत्तीकता और "गुरुमंज" का चैतन्य इन दोनों के संगम पर आप स्नान करते हैं, गुरुमंज का उच्चारण बोल कर करे ताकी उससे दो लाभ लोगे राक और जलत्व चैतन्य मय होगा और दूसरी ओर आप की चैतन्य जगण करने की क्षमता बढ़ेगी, इसे राकदम आसान है, इससे क्या होगा ऐसा अविश्वास न दिखाईये, यह आसान इस लिये ताकी यह प्रत्येक इसे कर लके आप स्वयंम अनुभूती लेकर देखीये, वस स्नान "सुर्योदय" के पूर्व करना आवश्यक है, आप सभी लोग इस चैतन्य स्नान विधी का लाभ ले और इस "आत्मजागृती" वर्ष में होने वाले ("आत्माओं के उत्सव") "महाशिवराजी" के पर्व पर होने वाले "कार्यक्रम" में राक "आत्मा" वन शामिल हो इसी शुद्ध इच्छा के साथ।

आपका  
आवात्वाणी  
राध ॥